वार्षिक रिपोर्ट

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

2002-2003

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद्)

देहरादून

वार्षिक रिपोर्ट
2002 - 2003

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद्)
देहरादून

संरक्षक :

श्री रविन्द्रपाल सिंह कटवाल

महानिदेशक

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

डाकघर–न्यू फॉरेस्ट, देहरादून– 248006 (उत्तरांचल)

प्रकाशित :

मीडिया एवं प्रकाशन प्रभाग

विस्तार निदेशालय द्वारा

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

डाकघर–न्यू फॉरेस्ट, देहरादून–248006 (उत्तराँचल)

के लिए प्रकाशित

संकलन एवं सम्पादन :

श्री एस. सिंगसिट, भा.व.से., उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प.

डॉ. वी.एन सिंह, भा.व.से., सहा. महानिदेशक (मीडिया व प्रकाशन), भा.वा.अ.शि.प.

डॉ. के.एस. भण्डारी, वैज्ञानिक–ई, भा.वा.अ.शि.प.

मार्च, 2003

मुद्रण :

माइक्रोसाफ्ट टेक्नोप्रिन्ट (ई.) प्रा. लि., देहरादून

फोंन – 0135–2653092

प्राक्कथन

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान प्रणाली में एक शीर्ष संस्था और दक्षिण एशिया में एक प्रमुख अनुसंधान संगठन है। परिषद् इस बात से जागरूक है कि गरीबों के आर्थिक उत्थान के लिए आज वानिकी अनुसंधान की आवश्यकता उत्पादन से हटकर संरक्षण एवं समुदाय आवश्यकता आधारित वानिकी अनुसंधान की दिशा में स्थानान्तरित हुई है। परिषद् आनुवंशिक एवं जैव प्रौद्योगिकीय अनुसंधानों, निम्नीकृत भूमियों के जैव–प्रत्युपाय, वन उत्पादों के सक्षम उपयोग, जैवविविधता के संरक्षण और वनों के नाशीजीवों एवं रोगों के एकीकृत प्रबंध द्वारा वन उत्पादकता सुधारने तथा वनों के वैज्ञानिक प्रबंध सुनिश्चित करने के लिए वानिकी के सभी पहलुओं पर अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार की आयोजना, प्रोत्साहन, संचालन और समन्वयन करके राष्ट्रीय स्तर पर वानिकी अनुसंधान के विकास के लिए प्रयासरत है। इसका वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में अनेकों राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग है।

परिषद् देश में वानिकी शिक्षा प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों को, उनकी अवसंरचना को मजबूत बनाने, इनकी शिक्षण एवं अनुसंधान क्षमताओं को बढ़ाने के उद्देश्य से तथा कार्यशालाओं/सेमिनारों/संगोष्ठी में सहभागिता/आयोजन करने के लिए भी, वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर लगातार वानिकी शिक्षा को प्रोत्साहित कर रही है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान परिषद् ने 16 विश्वविद्यालयों को रूपये 250 लाख उपलब्ध कराए। वानिकी शिक्षा की गुणवत्ता और वन अनुसंधान संस्थान सम विश्वविद्यालय के वानिकी विद्यार्थियों के नियोजन पर भी जोर दिया गया है। चालू वर्ष के दौरान स्नातकोत्तर डिप्लोमा एवं एम.एस.सी. डिग्री के 5 विदेशी विद्यार्थियों सहित 78 विद्यार्थी पास हुए। परिषद् ने उन विश्वविद्यालय शिक्षकों के लिए भी प्रशिक्षण शुरू किया है, जो विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों में वानिकी विषय पढ़ा रहे हैं। पी.एच.डी अवार्ड के लिए वर्ष के दौरान पंजीकृत 56 सहित वर्तमान में 386 रिसर्च स्कॉलर सम विश्वविद्यालय की नामावली में हैं। वर्ष में अठारह रिसर्च स्कॉलर को पी.एच.डी. डिग्री प्रदान की गई।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने ग्यारहवें अखिल भारतीय वन खेलकूद, 2003 का सफलतापूर्वक आयोजन किया। तीस टीमों का प्रतिनिधित्व करते हुए करीब सत्रह सौ सहभागियों ने खेलकूद में भाग लिया। परिषद् के दल को सर्वोत्तम मार्च पास्ट दल घोषित किया गया और मार्च पास्ट ट्राफी प्रदान की गई।

परिषद् के विस्तार निदेशालय ने राज्य वन विभागों, वन निगमों, किसानों, काष्ठ आधारित उद्योगों तथा अन्य उपभोक्ताओं के साथ सहानुबन्ध विकसित किए। देश के विभिन्न स्थानों में विभिन्न उपभोक्ता समूहों के लिए पैंतीस विभिन्न प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शनों की व्यवस्था की गई। वानिकी अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं पर एक सौ नब्बे शोधपत्र और इकतालिस तकनीकी बुलेटिन प्रकाशित किए गए। राज्य वन विभागों, वन निगमों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों, गैर सरकारी संगठनों, किसानों, उद्योगपतियों, अन्य सरकारी विभागों और अन्तिम उपभोक्ता समूहों के लिए वर्ष के दौरान वानिकी के विभिन्न विषय–क्षेत्रों पर पैतालिस प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा में सभी शैक्षिक एवं अनुसंधान कार्यकलापों के केन्द्र राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र ने अतिसावधानीपूर्वक चयनित 455 पुस्तकों की खरीद की और इसे 1973 पुस्तकें निःशुल्क प्राप्त हुई। पुस्तकालय का कुल दस्तावेज संग्रह 1,61,084 है। यह 147 विदेशी और 83 भारतीय पत्रिकाएं मंगाता है और इसे 350 पत्रिकाएं निःशुल्क भी प्राप्त होती हैं।

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान अनुसंधान नीति समिति ने वानिकी अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं पर 70 नयी अनुसंधान परियोजना और 159 जारी परियोजनाओं को स्वीकृति दी।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा भारत में शिल्पकारों की दक्षता को उन्नत करने और यांत्रिक काष्ठ प्रक्रमण के जगत में प्रवेश करने हेतु इन्हें तैयार करने के उद्देश्य के साथ एक उन्नत भारत–इटालियन संयुक्त परियोजना शुरू की गई है। नवीनतम इटालियन प्रौद्योगिकी पर आधारित भारत में यह पहला काष्ठ कर्म केन्द्र होगा।

मुझे भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट 2002–2003 प्रस्तुत करते हुए खुशी हो रही है, जिसमें वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के विविध कार्यकलापों को दिया गया है। मुझे आशा है कि यह रिपोर्ट नीति–निर्माताओं, आयोजकों, और विकास एजेन्सियों तथा उन सभी के लिए उपयोगी होगी, जिनकी वानिकी में साझेदारी है।

(रविन्द्रपाल सिंह कटवाल)
महानिदेशक
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
देहरादून

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् का संगठनात्मक चार्ट